जालना शहर अंतर्गत सहकार क्षेत्रों में महिला बचत गटों द्वारा महिला सबलीकरण

*डॉ. बापूसाहेब म्हस्के

शोधपत्र

कहा जाता है स्वातंत्र्योत्तर काल विशेष रूप से आर्थिक नियोजनका कालखंड माना जाता है । उस समय सामाजिक क्षेत्रों में सहकार आंदोलन की संकल्पना महत्वपूर्ण मानी गयी है । स्वातंत्र्यपूर्व स्थिति में महिलाओं का पंडित जवाहर नेहरू तथा अन्य समाज सुधारको ने स्त्रियों का यर्थाथ मूल्यमापन करते हुए 'सृष्टि की सृजनकर्ति' यह उपमा स्त्रियों को दी गई है । इसलिए महिलाओ का हर क्षेत्रों में आगे आना इस बात का द्योतक ही महिला जागृति कहा जाता है । एक महिला जागृत हुई तो हर परिवार जागृत होता है परिवार प्रगति करेगा उसके उपरांतही गाँव, शहर तथा देश की प्रगति हो सकेगी । स्वातंत्र्योत्तर काल में महिलॉओं का सामाजिक क्षेत्रों में तथा सहकार आंदोलन में सहभाग अनिवार्य मान कर उसका कार्यक्षेत्र 'रसोई तथा सन्तान उत्पति तक सीमित न मानकर समानता का जीवन व्यापक कर सके इसके लिए महिलाओं में आत्मविश्वास निर्माण कराना तथा उसे प्रतिष्ठा वंचित सत्तावंचित तथा अवसर वंचित न करते है । व उन्हें सक्षम बनाने के लिये सक्षमीकरण करना महत्वपूर्ण माना इसिलिए आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने का कार्य सहकार क्षेत्र में बचत गटों के माध्यम से किया गया । महिलांओ के विकास आर्थिक को माध्यम से ही दूर करने का प्रयत्न किया गया ।

1. आर्थिक विकास के कारण महिलाओं के हितो की रक्षा हो सकती है । 2. आर्थिक क्षेत्र में संघटित महिलाओं के अनुकूल नेतृत्व को उत्तेजन मिल सकता है । 3. महिलाओं के आर्थिक विकास में असंघटित क्षेत्रों के महिलाओं के उपाय योजना कार्यान्वीत की सकती है । आज की महिलाओं के आर्थिक नियोजन के लिये सरकार नितियॉं अमल में लाना जिसमें महिला श्रमिक व अधिकार तथा कानून अमंलबजावनी लागू करने हेतु विधेयक संसद में पारित करना, महिला कर्मचारी के कल्याण के लिये स्वतंत्रता व्यवसाय या लघु उद्योग का निर्माण और उसके माध्यम से महिलाओ की आर्थिक समस्या दूर करके आवश्यकतों की पूर्ति करना । महिलाओं में संघटित तथा असंघटित महिलाओं का प्रमाण ज्यादा है । ग्रामीण में सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में कृषी व्यवस्याओं में प्रमुख व्यवसाय खेती है । खेती के साथ-साथ पारंपरिक व्यवसाय भी दिखाई देते हैं । दारिद्र्यजन्य महिलाओं को स्वयंरोजगार उपलब्ध है । फिर भी बचत नहीं कर सकें । इसी वजह से महिलाओं का संशक्तीकरण करण मुश्किल है । आधुनिक काल में विशेषत: सहकार क्षेत्रों के कारण बचत गटों की क्रियाशीलता से आज महिला स्वालंबी बनी है । महिलाओ में सक्षम बनाने की प्रवृत्ति सहकार माध्यम से किया गया है । महिलाओं के बचत गट तयार करना, उनका अर्थोत्पादन में सहभाग बढाना एकात्मिक ग्रामीण माध्यम से किसान योजना का लाभ लेना दस महिलाओं से अधिक और 20 महिलाओं की अंदर में गट स्थापना करना और महिलाओं को प्रेरित करना कम से कम बचत का स्वरूप 10 रूपये से लेकर भविष्य में उपयोगता की जानकारी देना ।

सभी महिलाये परस्पर सहकारी तत्वों से अर्थोत्पादन में स्वय व्यवसाय करती है । उनके व्यवसाय के लिए सहकारी बँको का सहयोग मिलने के लिए प्रेरित करना । सहकारी बँको के जरिए महिलाओं को स्वयंरोजगार देना तथा शिबीर का आयोजन करना ।

1. बचत गटो की ओर से महिला जागृती हुई है । 2. सहकार क्षेत्रों में महिलाओं का सशक्तिकरण में बचतगटों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । 3. वर्तमान काल में बचत गटों के द्वारा हुए महिलाओं सक्षम बनाने का हेतु रहा है । 4. बचत गटों की ग्रामीण स्तरों पर क्या भूमिकाएँ है, उनका शहरों में क्या योगदान है,इसी के साथ ही साथ महिलओं में सराहणीय बदलाव करवाना है । की दृष्टि से पर्याय आवश्यक है 5. बचत गट की महिलाओं में आत्मविश्वास निर्भरता का उनके वयक्तित्व में वृध्दि हुई है । महिलओं के प्रति किये जा रहे लिंगभेद में समानता व सक्षमीकरण का विकास हुआ है । महिला विकास में महिला उद्योजगता के क्षेत्र में वृध्दि हुई है । कौटुम्बिक स्तर में उनका दर्जा तथा प्रतिष्ठा उल्लेखनीय है । उन्नीसवीं शताब्दी में सहकार आंदोलन का उदय इंग्लड में रॉबर्ट ओबेन के द्वारा हुआ और इसलिये औद्योगिक क्रांति व सहकार आंदोलन का जनक इंग्लंड को माना जाता है । भारत में यह आंदोलन 1904 से शुरू हुआ । परंतु इसका वास्तविक विकास आझादी के पश्चातही हुआ । वर्तमान में

* राष्ट्रमाता इंदिरा गाँधी महाविद्यालय, जालना (महाराष्ट्र)

भारत में अनेक संस्थाएँ एंव सहकारी बँक कार्यरत हैं । देशमें 26 से भी अधिक महिला सहकारी बँक कार्यरत हैं। आज सहकार क्षेत्रों में स्त्रियों की संख्या अधिक है । महिला सहकारी आंदोलन के कारण ही इंग्लंड में ग्राहक सहकारी संस्था का विकास हो गया हैं । सहकारी आंदोलन का वास्तविक विकास आझादी के बाद हुआ । पूँजीवाद और जमीनदारों के शोषण अत्याचारों के कारण मजदूर वर्गो विशेषत: महिलाएँ इनका शोषण होता रहा, इसे मुक्ति के लिए अर्थव्यवस्था को स्वालंबी बनाने के हेतु सहकारी संस्था तथा सहकारी बँक और महिला विकास के लिये सरकारकी ओर से सुविधाएँ महिलाओं को व्यवसाय में प्राधान्य तथा प्रौत्साहन देना, उनके विभिन्न संधियों उपलब्ध करवाना और पंचवार्षिक योजनाओं में सहकार संबंधी एक अंतरष्ट्रीय परिषद आयोजित की गयी थी । महिला सक्षमीकरण केवल स्त्री पुरूष समानता इस निती में विकास के लिये संपूर्ण समानता की दृष्टि परिवर्तीत कर सकता है । महिलाओं के सामाजीक परिस्थिति में आंतरीक गुणों को विकसित करना होगा । जिससे उनमें निर्भयता, दैनंदिन निरस और यातनामय कामों से मुक्ती, आर्थीक आत्मनिर्भरता और उत्पादन क्षमता में वृध्दि निर्णय लेने का अधिकार, सत्ता तथा संपत्ती में समान अधिकार, गततिसील समाज में उनके व्यक्तिगत विकास के अनुकूल परिस्थिती उपलब्ध करवाना, शारीरिक, मानसीक, शैक्षणिक और कौशल्यपूर्ण कार्यो में सक्षम तथा सबल बनाने हेतु को महिलाओं को देश के उत्पादन क्षेत्र में सहभागी करना ।

समाज शास्त्रीयों के मतों के आधारपर 'औद्योगिक विकास के माध्यम से सामाजीक परिवर्तन, उद्विकास प्रगती और क्रांती' यह बुध्दिविवेकता या लिंगभेद के आधार सहीत उत्पादन क्षमता पर होनेवाले निरंतर परिवर्तन में वृध्दि है । जीवन विषयक पहलु में संस्थात्मक परिवर्तन सामाजीक तथा आर्थिक परिवर्तन तथा स्त्री पुरूष समानता और समान अधिकार जिनमें संस्थाओं के द्धारा ग्रामीणस्तर पर परिवर्तन कर, शहरीकरण और औद्योगीकरण इस विविध पहलुओं द्धारा महिलाओं में होनेवाला राजकीय आरक्षण, ग्रामीण और नागरी नेतृत्व, ग्रामस्तरीय स्वराज्य संस्थाओं में परिवर्तन के द्धारा विकासात्मक संकल्पना निरंतर कार्यान्वीत होनेवाली प्रक्रिया है । इसी के साथ सशक्तिकरण, जागतीकरण व्यक्तीओं में होनेवाला राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय परिवर्तन, निरंतर वृध्दि के दृष्टी से महिलाओं के गुणात्मक तथा विकासात्मक दृष्टिकोनकोन ध्यान में रखकर महिला विकासके विविध घटक महत्वपूर्ण माने जा सकते हैं । आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, मानसीक इन्ह के द्धारा महिलाओं का विकास संभव हो सकता है । आर्थिक विकास के संदर्भ में 1970 के बाद नये विचार सामने आने लगे । 1971 में केन्द्रीय समाज कल्याण विभाग नये विचार सामने लाये जिसमें 1975 में समानता के दिशाओ में स्त्रीयोंको उत्पादन में कायम सहभाग देकर आर्थिक विकास के सहयोग के द्धारा महिला श्रमिकां का उत्पादन कार्य में महत्वपूर्ण माना हैं । महिलाओं के आर्थिक विकास के संकल्पना से सक्षमीकरण के लिये आर्थिक स्वातंत्र्य और आर्थिक क्षेत्रों में समान अधिकार देता है । जबतक अधिकार प्राप्त नहीं होता तबतक महिलाओं का विकास नहीं हो सकता क्योंकि उत्पादन क्षेत्र में महिलाओं को संधी दी हैं । इसी संदर्भ मे 1985 में नैरोबी में आंतरराष्ट्रीय महिला परिषदों में सक्षमीकरण तथा सबलीकरण यह संकल्पना रखी गयी । मानव विकास अहवाल में लिंगविकास निर्देशांक और लिंग भेदों के अनुसार कानुनी अधिकार इस दो घटकोंपर जोर दिया गया । इस के एक भाग में स्त्रियो की शिक्षा, आरोग्य (स्वास्थ) जीवनस्तर उच्च उठाने के लिये महिलाओं की प्रगती सक्षम बनाना और दूसरा भाग जिसके अंतर्गत व्यवस्थापन प्रशासन व्यवसायिक रोजगार है, महिलाओं को अर्थोत्पादन व्यवसायिक क्षेत्रों में आर्थिक अधिकार के साथ संसद मे निर्भित किया जाता है । पंचायत समिती, जिल्हा परिषद, नगर पालीका इसमें स्थान देने के दृष्टी से कानुनी रूप से परिवर्तन किया ।1994 में बिजींग में अंतरराष्ट्रीय महिला परिषद में प्रस्तावित महिला इनका सक्षमीकरण एक राष्ट्रीयनिती मानकर स्वीकार किया । मानवी संसधान शक्तीओं के दो महत्वपूर्ण घटक माने जाते है एक पुरूषों की श्रमशक्ती तथा महिलाओं की श्रमशक्ती भारत देश में 2001 की जणगणने के अनुसार 102 कोटी 70 लाख 14 हजार 257 है । उनमें महिलाएँ 49 कोटी 57 लाख 38 हजार 169 स्त्री उनका प्रमाण 48.26 टक्के है तो कामकाजी महिलाओं का प्रमाण 59.02 टक्के तथा क्षेत्रनिहाय संख्या प्राथमीक क्षेत्रों में 57.20 टक्के है ।

वर्तमान परिस्थिती : बचत गटोंका स्वरूप तेजी से बढते जा रहा है । यहा कारण है की 2001 में 1015 बचत गट थे आज उनकी सदस्य संख्या 15681 है तथा 25 कोटी के आसपास उनका ऋण वितरण है । बचत गट की माध्यम से बचत गटों के सदस्यो को आर्थिक स्वयंपूर्ण किया है । यही कारण है 'जहा गाँव वहाँ बचत गट' दिखाई देते है । बचत गटो की माध्यम से महिला सदस्य को प्रशिक्षण दिया गया हैं । उन्हें इसी वजह से उनके कार्य प्रणाली में बदलाव आया है । जिल्हा सहकार बँको में आज के स्थिति में बचत गटो के लिये अलगसे कार्यालय खोले है । आज मध्यवर्ती बँको में 100 कर्मचारी बचत गटों का काम देख रहे है । इतना ही नहीं तो बचत साधना यह एक उपक्रम क्रियान्वीत करके आदिवासी तथा दुर्गम भागों में बचत गटों की आवश्यकता तथा जानकारी देकर बचत गटों कि माध्यम सें सशक्तीकरण किया जहा रहा है । महिला जनजागृती कार्य 15 अगस्त 2004 मे शुरूवात की गयी, बचत गंगा यह मासिक के माध्यम से किया जा रहा है । आज शासन की ओर से तथा नाबार्ड के माध्यम से महिला सशक्तिकरण का प्रयोजन सबसे पहले जि.मध्यवर्ती बँको की ओरसे 800 स्वयंसहाय्यता बचत गटो के माध्यम से महिलाओं को प्रशिक्षित किया है ।

सहकार दृष्टी में महिलाओं में 'बिना सहकार नहीं उध्दार' इसी वजह से स्थानीक संस्थाओ के माध्यम से सहकार आंदोलन द्धारा महिला विकास तथा महिला जागृती के कारण ही आर्थिक सामाजिक,राजकीय तथा शैक्षणिक दर्जा प्राप्त होगा । यह दृष्टी से 30 प्रतिशत आरक्षित मिला । स्थानीक स्वराज्य संस्था तथा नगर निगम जिल्हा परिषदों मे 33 टक्के आरक्षीत महिलाओं के लिये रखा गया । ताकि महिलाओं को समाज में अधिकार प्राप्त हो महिलाएें कौटुम्बिंक व्यवस्था अहम भुमीकाए निभाती है । यही वजह से वह आर्थिक दृष्टी में आज दुर्बल है । महिलाओं में आज जागृती की आवश्यकता है । अनेक समाज सुधारक महर्षी कर्वे, महात्मा ज्योतीबा फुले, डॉ. आंबेडकर, महात्मा गाँधी आदि महान सुधारकों में महिला जागृती को अहम महत्व दिया गया । ग्रामीण तथा जिल्हास्तरोपर आज महिलाओं के हर क्षेत्र में वह उद्योग में हो या राजकिय नेतृत्व में महिलाओं के लिये प्रशिक्षित केंद्र तथा बचत गटों की प्राथमिकता देकर बँको के माध्यम से उन्हे पुरस्कृत किया गया । वर्तमान काल में महिला संस्थाओं के ओर से महिलाओं को संधी उपलब्ध करके विविध क्षेत्रों में महिला विकास शासन के मदत से किया गया ।

अध्ययन क्षेत्र : शहर अंतर्गत ग्रामिणस्तर तथा आदिवासीयों में महिला बचत गट के माध्यम से महिलाओं में जनजागृती हुई तथा आज महिला जगनजागृती के लिये जिल्हा बँको का क्या योगदान है इसी तरह सहकार क्षेत्रों में महिला बचत गटों पर योजना का क्या प्रभाव दिखाई देता है । वास्तविक रूप से महिलाओं का सशक्तिकरण हुआ क्या ? वास्त में जालना शहर यह औद्योगिक क्षेत्र संपन्न शहर माना गया है । यह शहर बीज, लोहे के कारण औद्योगिक क्षेत्र में परिपूर्ण शहर माना गया है । शहर में नॉबार्ड की ओर से कार्यशाला के आर्थिक विकास किया है । उसी तरह स्वयं सहाय्यता बचत गटों के माध्यम दुग्ध विद्यालय तथा बकरी पालन, कुक्कुट पालन, इसी तरह कृषी क्षेत्र भी बियाणे बनाने के कुटीर उद्योग, ब्युटी पार्लर, सब्जि, जुयोस्दव, वनसंपत्ति कि निर्मिती करना, आदिवासी तथा महिलाओं की ओर से उपक्रम किये है । आज महिलाओं का सशक्तिकरण के कारण महिलाएें निर्मिती प्रकल्प, माई प्रकल्प, पुरूषों, की तुलना में महिला अश्रित न होकर कामकाज कर रही है । हर क्षेत्र में महिला पुरूषों के साथ-साथ मिलाकर काम कर रही है । संक्षिप्त यहा कह सकते है कि बिना सहकार नहीं उध्दार । महिलाएँ सहकारी समिती द्धारा महिला उद्योग का पुनर्गठन हेतु सहकारी बँको द्धारा बचत गटों की योजना गठित कि हैं । नैसर्गिक रूप से महिलाओं में बचत की भावनाएँ तथा प्रमाणिकता यही गुणों से उसका गौरव किया जाता है ।

1. महिला बचत गटो द्धारा महिला स्वयमपूर्ण स्वनिर्णय स्वयंसिध्दा हुई । 2. स्वयंस्फूर्ती महिलाओ में जागृत हुई । 3. गैरप्रकार तथा स्वार्थ भावना कमी के कारण महिलाओं का स्थानिय संस्थाओं में सहभाग । 4. महिलाओं में संस्थेका हित महत्वपूर्ण मानकर उनकी भूमिकाएँ महत्वपूर्ण मानी । आर्थिक विकास के कारण महिलाओं में शैक्षणिक राजकीय तथा सांस्कृतिक विकास केवल सहकार आयोजकों के कारण हुआ यह कहना ही उचित होगा । महिलाओं में सशक्तिकरण यह एक महत्वपूर्ण भाग माना सहकारी संस्थाओं में महिलाओं के राखीव स्थान दिया गया । शासन के ओर से औद्योगिक इकाइया जैसे लघु उद्योग हस्तशिल्प तथा हथकरदा इकाइया के लिए तथा डेअरी पशुपालन इकाइया, सुवर पालन, मुर्गी पालन, बकरी पालन, मेंडी पालन तथा स्वयम् रोजगार योजनाद्धारा महत्वपूर्ण आर्थिक सहाय्यता भी बचत गटों को प्राप्त हुआ । यही वजह है कि आज महिलाओं का शसक्तिकरण तथा राजकारण में सक्षमीकरण की अहम भूमिका निभा रही है । खेती के साथ-साथ पारंपारिक व्यवसाय भी दिखाई देते हैं । दरिद्रजन्य महिलाओं का स्वयं रोजगार उपलब्ध है, फिर भी बचत नहीं कर सके । इसी वजह से महिलाओं का सशक्तिकरण करना मुश्किल है। महिलाओं में सक्षम बनाने की प्रवृत्ति सहकार माध्यम से किया गया है । महिलाओं के बचत गुट तैयार करना, उनका अर्थोत्पादन में सहभाग बढना, एकात्मिक ग्रामीण माध्यम से किसान योजना का लाभ लेना, दस महिलाओं से अधिका और 20 महिलाओं के अंदर गुट की स्थापना करना और महिलाओं को प्रेरित करके देना । कम से कम बचत का स्वरूप 10 रूपये से लेकर भविष्य में उपयोगिता की जानकारी देना । बचत गटो के कारण ही महिलाओं में आत्मबल आत्मविश्वास तथा स्वायता को बढाने हेतु अनुकूल वातावरण तैयार हो रहा है । आज वह स्वसहाय्यता समुह के जरिए अधिक सद्दढ तथा गतीशिल हो रही है । बचत गटो के माध्यम से ही स्वाधार संकल्पना का उदय हुआ है । स्वधार अंतर्गत विधवाएँ बेळदारा परितक्ता घटस्फोटित इ. श्रमिक महिलाओं को आधार प्राप्त हो रहा है।